अच्छे दिल वाला सबसे छोटा भाई

हंगरी की लोककथा

“हे...हे...” बौना आदमी चिल्लाया, उसकी ऊँचाई बालिश्त भर ही थी. उसके इस तरह प्रकट होने पर तीनों भाई इतने हैरान थे कि वह एक शब्द भी न बोले पाए.

“हे...हे...” बौना फिर चिल्लाया. लड़कों की चुप्पी ने उसे नाराज़ कर दिया था.

आखिरकार सबसे छोटा भाई ही कुछ बोल पाया, “इस बढ़िया दावत के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद.”

अच्छा हुआ सबसे छोटा समय रहते ही बोल पड़ा. अगर तीनों में से कोई भी न बोलता तो उन्हें तीन सम्मोहित राजकुमारियों के रहस्य का कभी पता न चलता और तीनों स्वयं ही पत्थर के बुत बन जाते.

लेकिन चूँकि सबसे छोटा भाई अच्छे दिल वाला था वह राजकुमारियों के रहस्य को सुलझा पाया. तीनों राजकुमारियों फूलों के रूप में एक झाड़ पर लगीं, हवा में इधर-उधर डोल रहीं थीं.

सबसे छोटे भाई ने जादू-मंत्र के प्रभाव को समाप्त कर राजकुमारियों को सम्मोहन से बाहर निकाला. तीनों भाइयों की जीत हुई.

यह कहानी हंगरी की एक लोककथा है जिसे पढ़ कर हर किसी को, चाहे वह बालिश्त भर ऊँचाई वाला हो या लंबा, खूब मज़ा आयेगा.

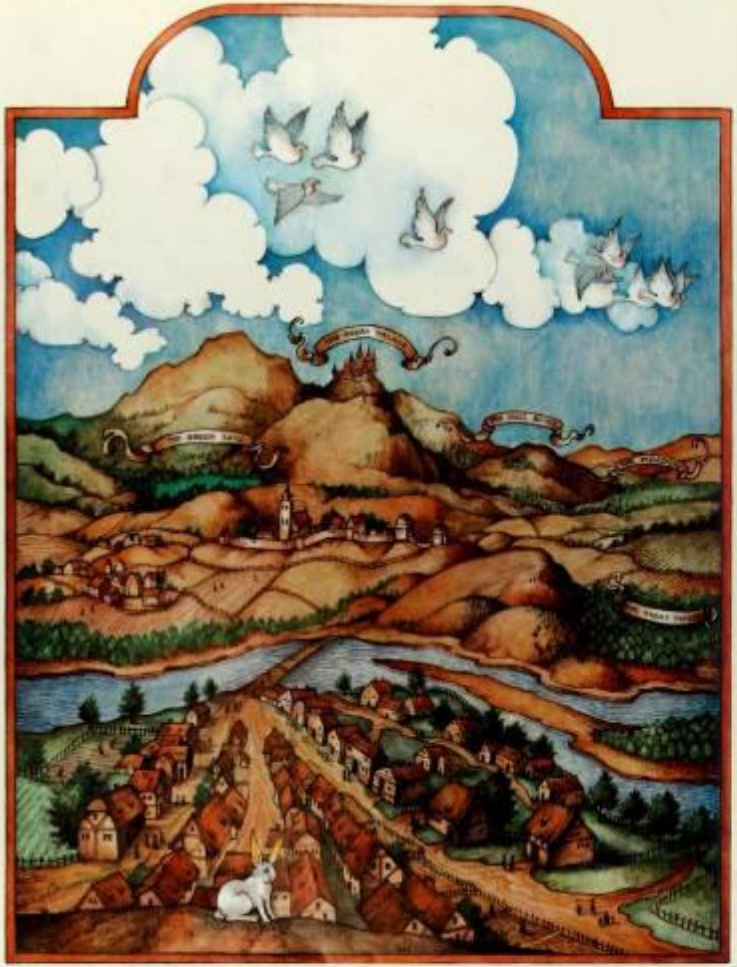

अच्छे दिल वाला सबसे छोटा भाई

हंगरी की लोककथा

एक समय की बात है. दूर, बहुत दूर, सात-गुना-सात देशों से भी दूर, जहां दुम-कटे छोटे सूअर बस मिट्टी खोदते रहते हैं, वहां एक सबसे छोटा भाई अपने दो बड़े भाइयों के साथ रहता था. तीनों भाई अच्छे थे.

जब उनके माता-पिता का निधन हुआ तो दो बंदूकों के अतिरिक्त उनके पास कुछ भी न था.

"इन दो बंदूकों को हम तीन भाई आपस में कैसे बांटे?" बड़े भाईयों ने कहा.

"इन्हें तुम दोनों रख लो," सबसे छोटे भाई ने कहा, "मेरे लिए तो इतना ही बहुत है कि तुम दोनों सदा मेरे अच्छे भाई बने रहो."

दोनों बंदूकें बड़े भाईयों ने रख लीं. अपने छोटे भाई को साथ ले वह धन की खोज में अपने घर से निकल पड़े.

वह दूर, बहुत दूर तक चले. वह यहाँ-वहां भटके. वह तब तक चलते रहे जब तक कि वह एक घने जंगल के निकट नहीं पहुँच गए. सैंकड़ों-हज़ारों कबूतर उस जंगल में उड़ रहे थे.

"मैं दो-चार जंगली कबूतरों का शिकार करूंगा," सबसे बड़े भाई ने बंदूक उठाते हुए कहा, "तब कम-से-कम हम थोड़ा-सा भूना हुआ स्वादिष्ट गोश्त तो खा पायेंगे."

"प्रिय भाई, इन पक्षियों का शिकार मत करो," सबसे छोटे भाई ने विनम्रता से कहा, "इन्होंने कभी भी हमारी कोई हानि नहीं की."

यह सुनकर बड़े भाई ने बंदूक नीचे की. वे फिर से चल पड़े.

वह दूर, बहुत दूर तक चले. वह यहाँ-वहां भटके. वह तब तक चलते रहे जब तक कि वह एक हरी झील के निकट नहीं पहुँच गए. वहां सैंकड़ों-हज़ारों मुर्गाबियाँ पानी में तैर रहीं थीं और डुबकियां लगा रहीं थीं.

"मैं दो-चार मुर्गाबियों का शिकार करूंगा," मझले भाई ने बंदूक उठाते हुए कहा, "सारी यात्रा में हमें कहीं भी अच्छा भूना हुआ मांस खाने को नहीं मिला."

"कृपया ऐसा मत करो. इन बेचारी मुर्गाबियों का शिकार मत करो. इन्होंने हमें कभी कोई कष्ट नहीं दिया," सबसे छोटे भाई ने बड़े प्यार से कहा.

मझले भाई ने भी छोटे भाई की बात मान ली. उसने बंदूक नीचे कर दी. फिर तीनों आगे चल दिए.

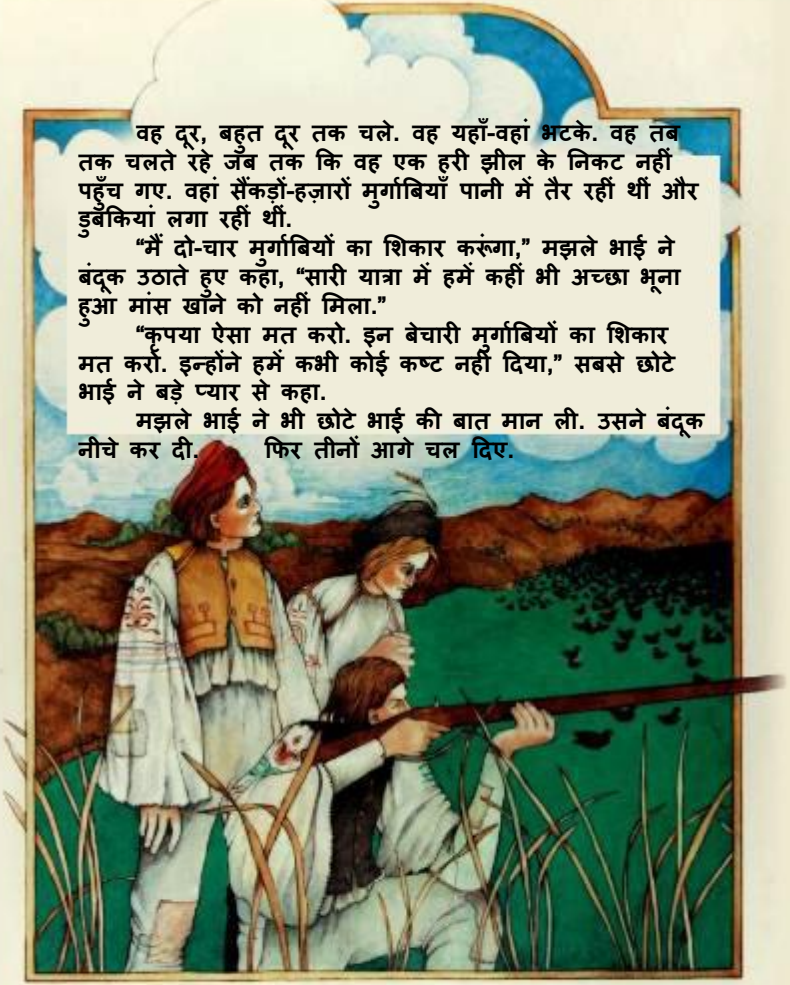

वह दूर, बहुत दूर तक चले. वह यहाँ-वहां भटके. वह तब तक चलते रहे जब तक कि वह एक घास के मैदान में नहीं पहुँच गए. वहां एक झाड़ी पर तीन सुंदर, बहुत ही सुंदर फूल खिले थे: एक था लिली, दूसरा था कार्नेशियन और तीसरा था गुलाब.

"कितने सुंदर फूल हैं!" दोनों बड़े भाई एक साथ बोले, "चलो इन फूलों को तोड़ लें."

"इन फूलों को मत तोड़ो,"
सबसे छोटे ने निवेदन किया, "यह एकदम मुरझा जायेंगे."

लेकिन बड़े भाईयों ने उसकी एक न सुनी और फूलों को तोड़ने के लिए आगे आये.

अचानक एक नन्हा-सा खरगोश झाड़ी से कूदकर बाहर आया. उसकी फर चाँदी के समान थी, उसके कान सोने जैसे चमक रहे थे, उसकी आँखें हीरों सी दमक रहीं थीं. वह इतने जोर से बड़े भाईयों पर कूदा कि दोनों पीठ के बल ज़मीन पर गिर गए. वह भयभीत हो गए. ज़मीन से उठने के बाद वह फूल तोड़ने का साहस न कर पाए. तीनों वहां से चल दिए.

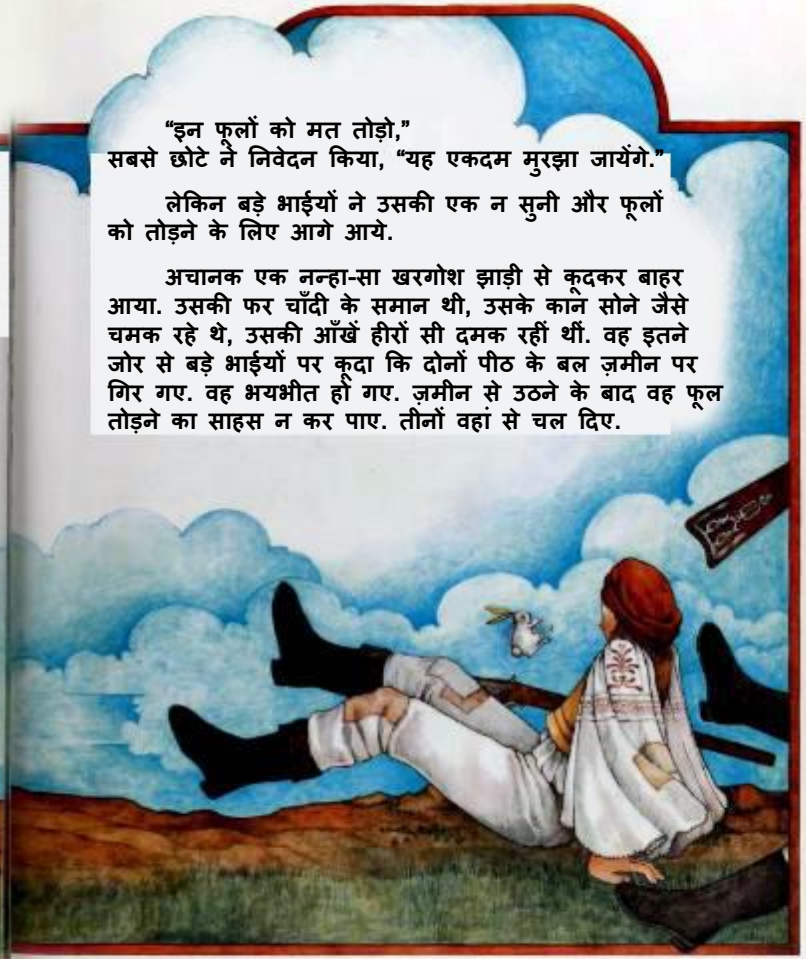

तीनों भटकते रहे, घूमते रहे और थोड़े समय के बाद वह एक छोटे से घर के निकट पहुँच गए.

उन्होंने घर के भीतर झांका. भीतर कोई भी न था.

“कितना अच्छा होता अगर कोई स्वादिष्ट चीज़ हमें खाने के लिए मिल जाती,” सबसे बड़े भाई ने कहा.

पलक झपकते ही भीतर मेज़ पर भूना हुआ स्वादिष्ट गोश्त, तरह-तरह के केक, लज़ीज़ पकवान और शरबत प्रकट हो गए. आश्चर्य से तीनों भाई देखते रह गए. लेकिन उन्हें बहुत भूख लगी थी. इस कारण वो अधिक समय तक आश्चर्य में डूबे न रहे.

भीतर आकर उन्होंने खूब दावत उड़ाई. उन्होंने ने इतना खाया कि उनके कान भी दो दिशाओं में घूम गए.

तब सबसे छोटे भाई ने कहा, “कितना अच्छा होता कि हम इस उपकार के लिए किसी का धन्यवाद कर पाते?”

तभी एक छोटा-सा आदमी उस छोटे से घर के भीतर कूदकर आ गया. उसकी ऊँचाई तो बालिश्त भर की थी लेकिन उसकी दाढ़ी सौ-गज़ लंबी थी. भीतर आते ही वह चिल्लाया:

"हे....हे...."

तीनों लड़के बस उसे घूरते ही रह गए. हरेक दूसरे से ज़्यादा डरा हुआ था. डर के मारे वो एक शब्द भी न बोल पाए.

अब बालिश्त भर आदमी ने गुस्से से कहा, "हे...हे..."

"आदरणीय छोटे चाचा," सबसे छोटे ने थोड़ी ऊंची आवाज़ में कहा, "इस बढ़िया दावत के लिए हम आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं."

"लड़को, तुम बहुत भाग्यशाली हो कि इस बच्चे ने कुछ कहने का साहस किया," बालिश्त भर के आदमी ने कहा, "अगर वह भी चुप रहता तो आज तुम सब का अंत हो जाता."

फिर उसी समय वह उन भाईयों को संगमरमर के बने एक विशाल, सुंदर महल की ओर ले आया. महल के विशाल आँगन में सैंकड़ों-हज़ारों पत्थर के घोड़े थे जिन पर सैंकड़ों-हज़ारों पत्थर के सैनिक बैठे थे.

संगमरमर की बनी सीढ़ी पर चढ़कर वह छत पर आ गए. छत पर भी सैंकड़ों-हज़ारों पत्थर के इंसान थे. वह एक बड़े पर खाली कमरे के अंदर आये. कमरे के बीच में तीन सोने की कुर्सियां रखीं थीं. उन कुर्सियों पर कोई बैठा न था.

"क्या वह कुर्सियां देख रहे हो?" बालिश्त भर के आदमी ने पूछा, "वह कुर्सियां तीन सुंदर राजकुमारियों की हैं, जिन्हें जादू से किसी ने सम्मोहित किया है. हरेक राजकुमारी के पास एक बहुमूल्य मोती और मुकुट था. तीनों मोती किसी जंगली कबूतर के अण्डों में सदा के लिए छिपा दिए गये हैं. तीनों मुकुट हरी झील के तल पर सदा के लिए रख दिए गए हैं. तीनों राजकुमारियां सदा के लिए फूल बन गयीं हैं, वही फूल जो तुम तीनों ने घास के विशाल मैदान में एक झाड़ी पर खिले हुए देखे थे."

"अगर कोई उन मोतियों और मुकुटों को ढूंढ़ निकाले," बालिश्त भर आदमी ने बताया, "फिर यह अनुमान लगाये कि कौन सा फूल कौन सी राजकुमारी है, फिर उन तीनों फूलों पर, बारी-बारी से - पहले बड़ी राजकुमारी पर, फिर मझली राजकुमारी पर, और अंत में छोटी राजकुमारी पर - एक मोती और एक मुकुट रखे तो वह इस भयंकर जादू के प्रभाव को खत्म कर पायेगा."

"लेकिन," उस आदमी ने चेतावनी दी, "अगर इस कोशिश में उसने एक भी गलती की तो उसी समय वह स्वयं पत्थर का बन जाएगा, वैसे ही जैसे वह लोग बन गए जिन्हें तुम ने यहाँ देखा."

वह आदमी कुछ देर चुप रहा. फिर उसने कहा, "तो तुम तीनों में से कौन इस जादू-मंत्र को तोड़ना चाहता है?"

हरेक भाई ने अपनी छाती ठोंकी. हरेक ने कहा कि वह मरते दम तक इस जादू-मंत्र को तोड़ने की कोशिश करेगा.

पहले सबसे बड़ा भाई अभियान पर निकला. वह बहुत घूमा, उसने बहुत खोजा. पर न उसे मोती मिले, न ही मुकुट. वह हार गया और पत्थर का बन गया.

फिर मझला भाई निकला. परन्तु उसे भी सफलता न मिली और बड़े भाई की तरह वह भी पत्थर का बन गया.

अंत में सबसे छोटा भाई अपना भाग्य परखने निकला. वह यहाँ-वहां घूमा, कई जगह गया, कई पेड़ों पर चढ़ा. लेकिन बहुत ढूँढने पर भी उसे जंगली कबूतर के अंडे का छिलका तक न मिला.

उसे लगा कि अब उसका सर्वनाश निश्चित था.

हार कर वह एक पेड़ के ठूँठ पर बैठ गया. निराशा के कारण वह अपने आंसू रोक न पाया.

वह रोने-बिलखने लगा. उसको इस तरह रोते देख, एक जंगली कबूतर पेड़ से नीचे आया और बोला, “अच्छे दिल वाले लड़के, रोना बंद करो. एक दिन तुम ने हम पर दया की थी, आज हम तुम पर दया करेंगे. यह रहे तीन अंडे जिन के अंदर वो मोती हैं जिन्हें तुम ढूंढ रहे हो.”

नवयुवक की ख़ुशी का ठिकाना न रहा. इस सहायता के लिए उसने जंगली कबूतर का धन्यवाद किया और झटपट हरी झील की ओर चल दिया.

“लेकिन मैं उन मुकुटों को झील के तल पर कैसे ढूंढूंगा? कैसे उन्हें झील से बाहर निकालूँगा?” उसने दुःखी मन से कहा, “मेरे पास तीन मोती तो हैं पर फिर भी मेरा सर्वनाश निश्चित है.”

सबसे छोटा भाई झील के किनारे बैठ गया और जोर-जोर से रोने लगा.

उसको इस तरह रोता-बिलखता देख एक मुर्गाबी उसके पास आई और बोली, “रोओ मत, यह रहे वह तीन मुकुट जो झील के तल पर पड़े थे. तुम उदार और दयालु लड़के हो, तुम्हारी अच्छाई का अच्छा फल तुम्हें मिलना ही चाहिए.”

तीनों मुकुट पा कर युवक कितना खुश हुआ! उसने मुर्गाबी का धन्यवाद किया और घास के उस मैदान की ओर चल पडा, जहां एक झाड़ी पर तीन सुंदर फूल खिले थे.

वहां पहुँच वह सोच में पड़ गया. “अब कौन बड़ी राजकुमारी है, कौन मझली है और कौन सबसे छोटी?” उसने दुःखी आवाज़ में कहा.

वह सारा दिन झाड़ी के पास खड़ा, उन फूलों को देखता रहा, देखता रहा, बस देखता रहा. किसी फूल को छूने का साहस उसने न किया. वह डर रहा था कि कहीं वह कोई गलती न कर दे और पत्थर का न बन जाए.

निराशा में उसके आंसू बहने लगे. वह रोने लगा, बिलखने लगा. उसका रोना-बिलखना देख, नन्हा खरगोश - जिसकी फर चाँदी समान थी, कान सोने से चमक रहे थे, आँखें हीरों सी दमक रहीं थीं - फुदक कर उसके सामने आ खड़ा हुआ और बोला, “लड़के, इस तरह रोओ मत. मेरी बात ध्यान से सुनो; लिली सबसे बड़ी राजकुमारी है, कार्नेशियन मझली राजकुमारी है और गुलाब सबसे छोटी राजकुमारी.”

सबसे छोटा भाई प्रसन्नता से खिल उठा. उसने तनिक भी देर न की और सबसे पहले लिली की डाल पर एक मोती लटकाया और उसके ऊपर एक मुकुट रखा. फिर कार्नेशियन की डाल पर मोती लटकाया और उस पर मुकुट रखा. अंत में गुलाब की डाल पर मोती लटका कर मुकुट रखा.

बस पलक झपकते ही तीनों फूल सुंदर राजकुमारियों में बदल गए. जादू-मंत्र का प्रभाव सदा-सदा के लिए खत्म हो गया.

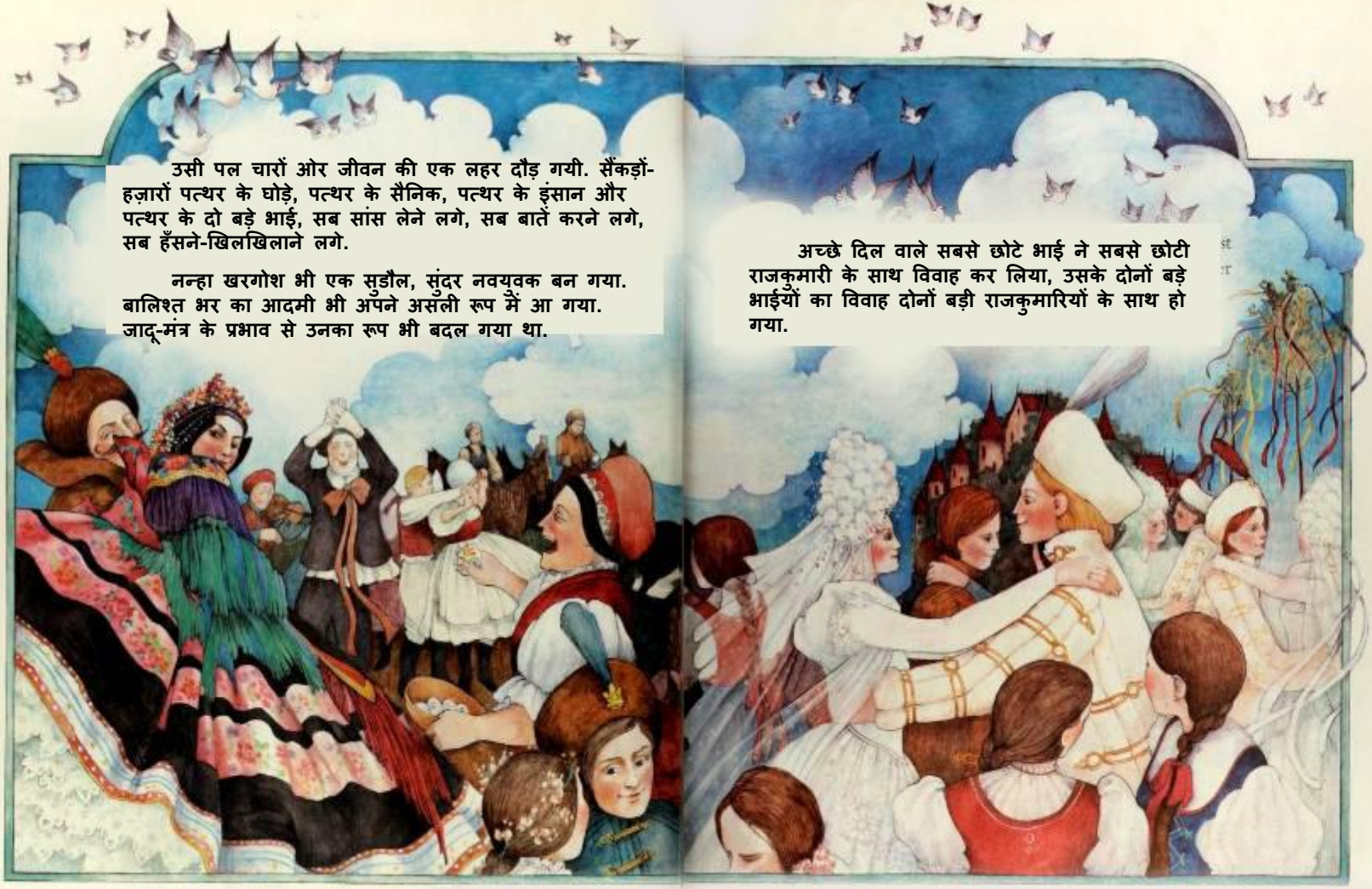

उसी पल चारों ओर जीवन की एक लहर दौड़ गयी. सैंकड़ों-हज़ारों पत्थर के घोड़े, पत्थर के सैनिक, पत्थर के इंसान और पत्थर के दो बड़े भाई, सब सांस लेने लगे, सब बातें करने लगे, सब हँसने-खिलखिलाने लगे.

नन्हा खरगोश भी एक सुडौल, सुंदर नवयुवक बन गया. बालिश्त भर का आदमी भी अपने असली रूप में आ गया. जादू-मंत्र के प्रभाव से उनका रूप भी बदल गया था.

अच्छे दिल वाले सबसे छोटे भाई ने सबसे छोटी राजकुमारी के साथ विवाह कर लिया, उसके दोनों बड़े भाईयों का विवाह दोनों बड़ी राजकुमारियों के साथ हो गया.

उसके बाद वह सब लंबे समय तक बड़ी
प्रसन्नता से जिये और, अगर वह जीवित हैं तो,
अभी भी प्रसन्नता से जी रहे हैं.